Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain College (Ara)
B.A Part - III
paper - 7
Topic - Modernisation of Japan - Part - II

संतुष्ट नहीं हुए क्योंकि उनसे बहुत कड़ा लगान वसूल किया जाता था। अतः इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नई सरकार ने किसानों की स्थिति में सुधार करने का प्रयास हर तरह से किया, लेकिन वह अपने कार्यों में पूर्णतः सफल नहीं हो पाया।

शिक्षा में सुधार :

जापान के आधुनिकीकरण के लिए यह आवश्यक था कि अब शिक्षा में सुधार के लिए व्यापक कार्य किया जाए। अतः सरकार ने पुनः स्थापना के बाद शिक्षा में प्रगति के लिए विभिन्न प्रयास शुरू किए। इस क्रम में सबसे पहले 1868 के शाही शपथ निर्देश "हर स्थान से ज्ञान प्राप्त किया जाए" के अनुसार 1871 ई० में शिक्षा विभाग की स्थापना की गई। इसके लिए एक कानून बनाकर व्यवस्था कर दी गई कि "हर व्यक्ति ऊँचा और नीचा स्त्री और पुरुष शिक्षा प्राप्त करे जिससे सारे समाज में कोई भी परिवार और परिवार का कोई भी व्यक्ति अशिक्षित और अज्ञानी न रह जाए।" प्राथमिक शिक्षा सबके लिए अनिवार्य कर दी गई। पूरे देश को आठ विश्वविद्यालय क्षेत्रों में बाँटा गया। इन क्षेत्रों में 32 माध्यमिक प्रदेश बनाए गए। हर प्रदेश को 210 प्राथमिक पाठशाला हलकों में विभक्त किया गया। इस प्रकार हर 600 आदमियों के लिए एक प्राथमिक पाठशाला उपलब्ध हो गई। 6 वर्ष के बालक बालिकाओं के लिए पहले 4 वर्ष बाद में 6 वर्ष का शिक्षणकाल पूरा करना अनिवार्य कर दिया गया।

जापान में अनेक विश्व विद्यालयों की स्थापना हुई। स्त्री शिक्षा पर भी अब काफी ध्यान दिया जाने लगा, तथा 1913 ई० में जापान में एक महिला विश्व विद्यालय की स्थापना हुई। नई-2 जानकारी प्राप्त करने के लिए जापानियों में बड़ा उत्साह था और यह यूरोपीय भाषा के माध्यम से ही संभव था। अतः इस युग में अंग्रेजी भाषा को माध्यमिक और उच्चतर पाठ्यक्रमों का अंग बनाया गया। अर्थात् इस नई शिक्षा पद्धति में पाश्चात्य विद्याओं को प्रमुख स्थान दिया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में जापान में काफी सुधार हुआ।

बाकी आगे - - - -

पा॰

औद्योगीक विकास :- जापान की सरकार ने सबसे अधिक ध्यान देश के औद्योगीक विकास पर दिया। जापानी लोग यह अनुभव कर रहे थे कि व्यवसाय के क्षेत्र मे वे पाश्चात्य राज्य की तुलना मे बहुत पिछड़े है और जब तक वे पर्याप्त आर्थिक विकास नहीं कर लेते तब तक पश्चिमी राज्यों का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। अत: जापान में शीघ्र ही नए-2 कल कारखाने स्थापित किए गए और यूरोप तथा अमेरिका से मशीने मँगवाई गई। सरकार की ओर से जापान मे कल कारखाने खोलने के लिए लोगों को खुब प्रोत्साहीत किया गया। इसके परिणाम स्वरूप कुछ ही वर्षों के अंदर जापान में औद्योगिक क्रांति हो गई और जापान कल कारखानो का देश हो गया। जापान के सरकार की यह नीति थी कि ऐसे व्यावसायो के विकास पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाए जो सैनिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो इसलिए जापान मे खाने खोदी गई लोहा इस्पात के व्यवसाय को उन्नत किया गया तथा युद्धोपयोगी सामग्री के उत्पादन के लिए कारखाने खोले गए। वाष्प शक्ति के विकास पर विशेष बल दिया गया। औद्योगिक क्षेत्र में कुछ वर्षों में जापान ने इतनी उन्नति कर ली कि वह यूरोप के किसी भी राज्य का इस क्षेत्र मे मुकाबला कर सकता था।

इसके अलावा यातायात और संवादवहन के साधनो में विकास के लिए भी प्रयास किया गया। 1872 ई० मे जापान मे सर्वप्रथम रेल लाइन का निर्माण शुरु हुआ। रेल की ये लाइने, आंतरिक व्यापार व्यवसाय की उन्नति में पर्याप्त सहायता पहुंचा रही थी। इसके साथ ही जापान की सरकार ने डाक विभाग का संगठन भी किया। 1868 मे टेलीग्राफ का जापान में पहले पहल प्रवेश हुआ। कुछ ही दिनों में जापान मे डाकघरों की स्थापना भी हो गई। व्यवपारिक गतिविधियों को चलाने के लिए तथा लोन लेकर नए व्यवपार की शुरुआत करने के लिए जापान में बैंकों की स्थापना की गई।

औद्योगीकरण के लिए खानो का विकास जरुरी था। 1864 में होजन मे आधुनिक ढंग की कोयले की खाने शुरु हुई। 1878 ई० मे खान विभाग आरंभ हुआ

और इसमें 34 विदेशी रखे गए। 1880 ई० तक सरकार की ओर से 8 कोयले की खानें चलने लगी। फिर सरकार ने एक लोहे की खान खोली और सोने चाँदी की खानों का धंधा अपने हाथ में ले लिया। इस प्रकार व्यावसायिक उन्नति, रेलवे का निर्माण और बैंकिंग विकास के कारण जापान के आर्थिक संगठन मे काफी परिवर्तन आ गया। अब इसका स्थान पाश्चयात देशो के समान हो गया। जापान की इस औद्योगिक विकास ने ही बाद मे जापान में साम्राज्यवाद को जन्म दिया।

सैन्य व्यवस्था में सुधार

जापान की सैनिक व्यवस्था सामंती प्रथा पर आधारित थी, इसलिए सामंती व्यवस्था का अंत होने के कारण सेना के संगठन मे परिवर्तन आवश्यक हो गया। अब तक जापान का सेना निर्माण सामुराई लोगों द्वारा होता था। सामुराई लोग सामंतो की सेवा मे रहकर सैनिक सेवा प्रदान करते थे। सेना मे प्रवेश इसी वर्ग तक ~~सिमित~~ सीमित था और जनसाधारण को सैनिक सेवा का अवसर नहीं दिया जाता था लेकिन सामंती प्रथा के अंत के साथ सामुराई लोगों के इस एकाधिकार का भी अंत हो गया और जापान के सभी वर्गों के लिए सेना में भर्ती के लिए दरवाजा खोल दिया गया। 1872 ई० में सेना संगठन मे एक दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। राजाज्ञा प्रकाशित कर जापान में सैनिक सेवा को अनिवार्य घोषीत कर दिया गया। जापान के नागरिको के लिए सैनिक शिक्षा प्राप्त करना तथा निश्चित समय तक सैनिक जीवन व्यतीत करना अनिवार्य हो गया। इस प्रकार जापान में सैन्य व्यवस्था मे काफी सुधार हुआ।

नागरिक जीवन में सुधार

शिक्षा और चिंतन के पश्चिमीकरण पत्रकारिता के विकास और विदेश आने-जाने की वृद्धि ने जापान के सामाजिक रहन-सहन को तुरंत प्रभावित किया तथा जापान की जीवन शैली और सांस्कृतिक क्षेत्र मे क्रांतिकारी

परिवर्तन देखने को मिला। विदेशी व्यापार में लगे जापानी विदेशी पोशाक पहनने लगे तथा सैनिकों का हैट भी लगाने लगे। 1872 ई० में सभी राजकीय पदाधिकारियों को पाश्चात्य वेश भूषा धारण करना अनिवार्य कर दिया गया। शरीर के बाहरी साज - सज्जा पर भी काफी ध्यान दिया गया। सिर मुड़वा कर और बराबरों में बालों की लटे छोड़ने और फिर उन्हें ऊपर लाकर गांठ बांधने का रिवाज जापान में प्रचलित था। यह प्रथा बंद हो गई और इसका स्थान यूरोपीय केश सज्जा ने ले लिया। दांतों की चमक - दमक पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाने लगा।

जापान में सर्वप्रथम बिजली का प्रवेश 1887 ई० में हुआ। तब से बिजली का प्रयोग बहुत बढ़ गया। साथ ही जापान में पश्चिमी शैली के मकान बनने शुरू हुए। उनकी सजावट की शैली भी यूरोपीय हो गयी। शहरों में बड़ी मात्रा में सवारियां चलने लगीं। 1880 में बॉलरूम में यूरोपीय ढंग से नाचने का रिवाज बढ़ा। आधुनिकता के आवेश में लोगों ने 1872 ई० में सम्राट को गोमांस खाने के लिए उकसाया। तब से गोमांस खाना जापान के सम्राट वर्ग का एक मुख्य लक्षण हो गया। जापान ने अपनी प्राचीन ललितकलाओं को भी त्याग दिया और उनके स्थान पर मशीनों द्वारा छपी हुई तस्वीरों का आयात किया यहां तक की खाने पीने के बर्तनों तक का यूरोपीकरण कर दिया गया।

अतः इस प्रकार हम देखते है कि जापान के सामाजिक जीवन में काफी परिवर्तन हुआ और दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि जापान के समाज का पूर्णतः यूरोपीकरण हो गया।

नए संविधान का निर्माण

राजनीतिक दलों की गतिविधियों से जापान का जीवन अशांत होते जा रहा था। सरकार के लिए लोकमत पर ध्यान रखते हुए कुछ संवैधानिक सुधार करना अत्यंत आवश्यक हो गया था। अतः Oct 1881 में एक घोषणा प्रकाशित कर यह वचन दिया गया कि 1890 तक जापान के लिए एक नया संविधान बना जाएगा और इसके अनुसार

एक राष्ट्रीय संसद का गठन किया जाएगा। इसके बाद संविधान निर्माण की तैयारी होने लगी। 3 March 1882 को इतो हिरोबूमी को पश्चिमी देशों की शासन पद्धति का अध्ययन करने के लिए यूरोप भेजा गया। इतो ने बर्लिन के प्रसिद्ध विधिवेत्ताओं से परामर्श किया, फिर वह आस्ट्रिया की राजधानी वियना आया। वहाँ उसे यह सलाह प्राप्त हुई कि ऐसा संविधान बनाया जाए जिसमें मंत्रिपरिषद संसद की जगह सम्राट के प्रति उत्तरदायी हो और सम्राट को संसद के किसी भी फैसले को रद्द करने का अधिकार हो। वियना से इतो पेरिस, लंदन तथा रूस होते हुए जापान लौटा। 1884 में जापान लौटने पर संविधान बनाने का काम सौंपे जाने पर इतो ने विदेश यात्रा के समय चुने तीन सुयोग्य सहकारियों को अपनी सहायता के लिए नियुक्त किया। इतो की यह मंडली सम्राट परिवार से संबद्ध कर दी गई ताकि इसे उदारवादियों के राजनीतिक दबाव से दूर रखा जा सके। संविधान के प्रारूप तैयार होने पर प्रिवी कौंसिल ने इसकी पुष्टी की, सारा कार्य समाप्त होने पर 1 feb 1889 को नए संविधान की घोषणा की गई।

निष्कर्ष

अतः इस प्रकार अंत में हम कह सकते है कि पुनः स्थापना के बाद जापान के जीवन के प्रत्येक पक्ष का कायापलट हुआ। खाने-पीने, जीवन यापन सोच विचार तथा राजनीतिक आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक जीवन की सारी क्रियाए आश्चर्यजनक तेजी के साथ बदलती गई। और कुछ ही समय मे जापान एक उन्नत आधुनिक देश के रूप मे संसार के सामने प्रकट हुआ।